Indian Civilization and Culture Summary in Hindi

प्रस्तुत उद्धरण “Indian Civilization and Culture" अनुपम एवं अतुल्य भारतीय सभ्यता पर प्रकाश डालता है । यह गाँधीजी के भीतर की देश-भक्ति को उजागर करता है जिसने उन्हें यह लिखने के लिए प्रेरित किया । इस पाठ से हमें मालूम होता है कि भारतीय सभ्यता अन्य पुरानी सभ्यताओं में अपनी अलग पहचान रखती है । इस सभ्यता की अनोखी प्रवृत्ति गाँधीजी को दूसरी सभ्यताओं से इसकी उपमा करने के लिए प्रेरित करती है । वे बताते हैं कि कोई दूसरी सभ्यता भारतीय संस्कृति का मुकाबला नहीं कर सकती ।

गाँधीजी के अनुसार भारतीय सभ्यता का इतिहास श्रेष्ठ और गौरवपूर्ण है । अन्य प्राचीन सभ्यताएँ समाप्त हो चुकी हैं या पूर्व की तरह वैभवशाली नहीं है । परन्तु भारत अभी तक है और इसी में उसकी गरिमा है । बहुत लोगों ने अपने सुझाव भारत पर थोपने चाहे लेकिन सफल न हुए ।

गाँधीजी का कहना है कि सभ्यता हमें कर्त्तव्य का मार्ग दिखाती है । कर्त्तव्य पालन और सद्व्यवहार का अनुसरण करना एक समान है । नीति-विद्या का अनुसरण करने का मतलब होता है अपनी इच्छाओं व कामनाओं पर अंकुश लगाना । भारतीय इसे पहले ही जान चुके हैं, अब उन्हें कहीं से कुछ भी सीखने की आवश्यकता नहीं है । अतः

हमारा मन चंचल है, यह हमेशा असंतुष्ट रहता है और इसकी इच्छाएँ कभी खत्म नहीं होतीं । हमारे पूर्वज मन पर अंकुश रखते थे और संतुष्ट रहते थे । वे विलासपूर्ण जीवन नहीं जीना चाहते थे । वे जानते थे । वे आराम तलबी के पक्ष में नहीं थे और अपने हाथ-पैर का प्रयोग कर स्वस्थ रहते थे। वे शहरों में नहीं रहते थे क्योंकि ये जानते थे, वहाँ चोरी-डकैती, लूट-पाट और वेश्यावृत्ति का मायाजाल होगा । आम जनता गाँवों में स्वतंत्रता से रहती थी। वे अपने घर में ही खुश थे और शांति से समय गुजारते थे ।

भारतीय सभ्यता मानव के संस्कारों व गुणों को उन्नत करती है लेकिन पश्चिमी सभ्यता व्यभिचारियों को बढ़ावा देती है। गाँधीजी के मुताबिक उन्होंने आधुनिक सभ्यता से एकमात्र

यह सीखा है कि उससे दूर रहना चाहिए । आधुनिक सभ्यता का अर्थ है जड़वाद, अनात्मवाद ।

नवीन आविष्कार हमें क्षणिक सुख देते हैं और हम इसके प्रभाव में आकर क्षणमात्र के सुख के लिए स्थायी पुण्य को बलिदान कर रहे हैं । भारत के पास भले ही तुच्छ आविष्कारों की खोज का श्रेय नहीं है, परन्तु इसके पास आत्मा, धर्म और जीवन सत्व की खोज का श्रेय हैं ।

भारतीय सभ्यता ने कई अन्य सभ्यताओं का अंत देखा है । इसलिए इसने कभी भी किसी सभ्यता से कुछ भी नकल नहीं किया । पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण करना मतलब स्वयं का विनाश । आधुनिक सभ्यता के लोग स्वयं के स्वामी बनने के बजाय विलासपूर्ण जीवन के दास बन गए है । हमारा सिद्धांत 'सादा जीवन उच्च विचार होना चाहिए न कि विलासपूर्ण जीवन और संकुचित सोच ।' सभ्यता मुख्यतः खुशी, प्रसन्नता और कर्तव्यपालन को बढ़ावा देती है । गाँधीजी कहते हैं कि एक हद तक शारीरिक विश्राम भी आवश्यक है परन्तु यह भी उचित

सीमा के अंदर ही ठीक है । हमें अपने सांस्कृतिक व शारीरिक परिस्थितियों को इस प्रकार संतुलित करना चाहिए कि वे हमें मानवता की सेवा में बाधा न पहुँचाएँ ।